❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj

वर्ष 47, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 दिसम्बर, 2023 से रविवार 10 दिसम्बर, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

चलो टंकारा! चलो टंकारा!! चलो टंकारा!!!

आओ चलें टंकारा - सम्पूर्ण विश्व में गूंजेगा दयानन्द का जयकारा - आओ चलें टंकारा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्मभूमि टंकारा, जिला-राजकोट (गुजरात) में

200वां जन्मोत्सव-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव समारोह

10-11-12 फरवरी, 2024 (शनि-रवि-सोम) तदनुसार माघ शु. 1-2-3 वि.2080

आर्यजनों, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जन्मोत्सव एक ऐतिहासिक अवसर है। किसी महापुरुष की जन्म शताब्दी अथवा द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर किसी को भी जीवन में दोबारा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। अतः समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्यालयों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों के माननीय अधिकारियों से अनुरोध है कि -

- आयोजन की उपरोक्त तिथियों : 10-11-12 फरवरी में अपना कोई भी आयोजन न रखें
- समस्त साथियों, अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं के साथ सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ कर लें
- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के ऐतिहासिक स्मरणोत्सव समारोह को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाएं
- पधारने वाले सभी आर्यजनों के लिए भोजन एवं सामान्य आवास व्यवस्था 9 से 12 फरवरी तक निःशुल्क रहेगी
- आर्यजन टंकारा पहुंचने के लिए तुरन्त रेलवे आरक्षण करा लें, चाहे वेटिंग ही मिले। यदि आपका टिकट वेटिंग में है तो कृपया 9311413920 पर व्हाट्सएप्प करें, जिससे ग्रुप में कन्फर्म कराने का प्रयास किया जा सके

-: निवेदक :- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाज के प्रमुख संगठनों के मुख्य अधिकारियों और कर्मठ कार्यकर्ताओं की दो दिवसीय विशेष बैठक

16-17 दिसम्बर, 2023 (शनिवार-रविवार) दोपहर 2 बजे से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के दो वर्षीय कार्ययोजना की प्रस्तुति, कार्यक्रमों के निर्धारण और विभिन्न संगठनों की भूमिका निर्धारित करने हेतु सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति एवं विभिन्न संगठनों की दो दिवसीय विशेष बैठक **16-17 दिसम्बर, 2023 (शनि-रवि)** को **दोपहर 2 बजे से आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली** में आमन्त्रित की गई है। बैठक का ऐजेण्डा पत्रक सभी को विधिवत् भेजा गया है।

अतः सभी सम्मानीय अधिकारियों एवं सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर दो वर्षीय आयोजनों के निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

आपसे अनुरोध है कि आप सब 15 दिसम्बर की रात्रि या 16 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे तक दिल्ली पहुंचने के लिए अपना रेलवे/हवाई यात्रा का आरक्षण करा लेवें और वापसी टिकट 17 दिसम्बर की देर रात्रि को ही करवाएं। कृपया अपने पधारने की सूचना श्री सन्दीप आर्य जी 9650183339 को व्हाट्सएप्प से अवश्य भेजें, जिससे आवास एवं भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सुरेशचन्द्र आर्य
(प्रधान)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य
(प्रधान)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, शिक्षाविद् आर्य समाज के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी

अमर हुतात्मा
स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द
97 वाँ बलिदान दिवस

सोमवार 25 दिसम्बर 2023

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

भव्य शोभायात्रा व सार्वजनिक सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली
यज्ञ : प्रातः 8 से 9:30 बजे
शोभायात्रा का प्रारम्भ : प्रातः 10 बजे

सार्वजनिक सभा : मध्याह्न 12:30 से 3:30 बजे
रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

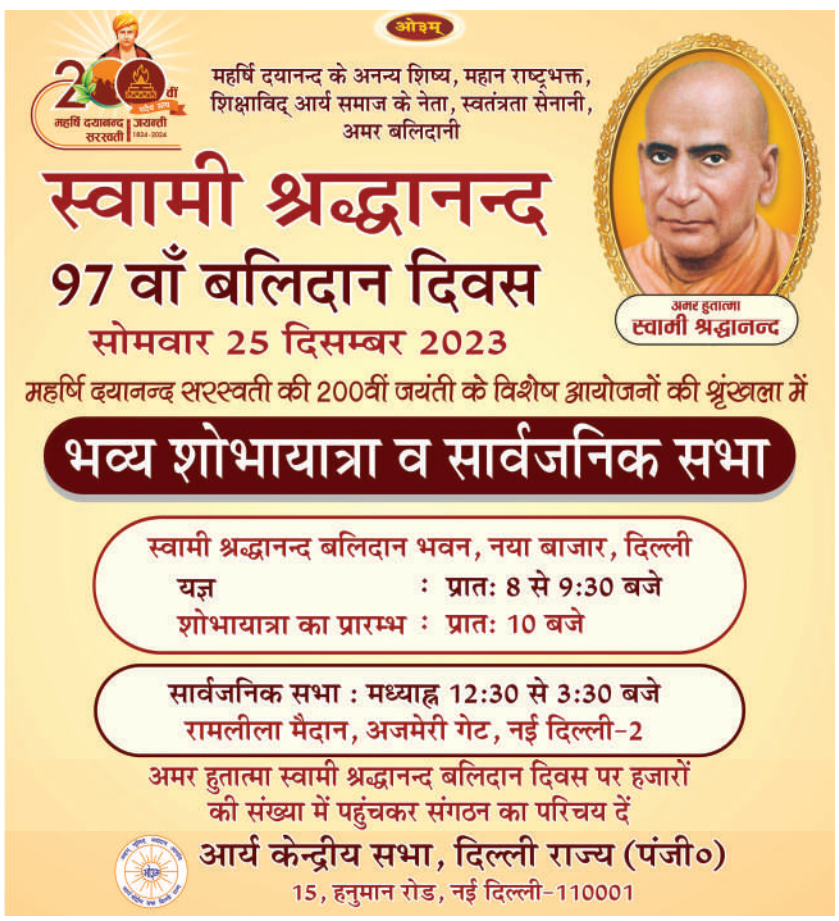

देववाणी-संस्कृत

सब कुछ देने में समर्थ

वेद-स्वाध्याय

ईशे ह्य ग्निरमृतस्य भूरेरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः।
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः।। - 7।4।6
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **स्वाराट्पङ्क्तिः।।**

शब्दार्थ - **अग्निः** = परमेश्वर **हि** = निश्चय से **भूरेः** = बहुत प्रकार के **अमृतस्य** = अमरपन के, आध्यात्मिक ऐश्वर्य के **दातोः** = देने में **ईशे** = समर्थ है और **सुवीर्यस्य** = सुन्दर वीरतासहित **रायः** = धन के, भौतिक ऐश्वर्य के देने में **ईशे** = समर्थ है, परन्तु **सहसावन्** = हे सर्वशक्तिमन्! बलवन्! **वयम्** = हम **त्वा** = तेरी **अवीराः** = वीरतारहित, कायर होकर **मा** = मत **परिषदाम** = उपासना करें **अप्सवः** = कुरूप, विकृत होकर **मा** = मत उपासना करें और **अदुवः** = असेवक होकर **मा** = मत उपासना करें।

विनय - हे अग्ने! हम तुम्हारी बहुत-सी विफल उपासना करते हैं। तुम तो सर्वशक्तिमान् हो, हमें सब-कुछ दे सकते हो। हमें प्रभूत अमृत, विविध प्रकार का आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ हो, सुवीरता आदि सहित सब प्रकार का भौतिक धन देने में समर्थ हो, परन्तु हम ही हैं जो तुम्हारी आराधना करने के अयोग्य हैं, अतएव तुम सर्वदाता से भी हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। हम कितने मूर्ख हैं कि निवीर्य होकर, विकारयुक्त होकर और सेवा-रहित होकर तुम्हारा भजन करना चाहते हैं! भला, हम कायर लोग, हे सहसावन्! तुम्हारी क्या उपासना कर सकते हैं? हम विकारयुक्त, मलिन हृदयों वाले तुम्हारी क्या उपासना करेंगे? हम सेवारहित स्वार्थी पुरुष तुम्हारी उपासना से क्या लाभ प्राप्त करेंगे? अतः हमने आज से निश्चय किया है कि अब हम वीर्यहीन, विकृत और असेवक होकर कभी तुम्हारी उपासना में नहीं बैठेंगे। हम सब कमजोरियों को हटाकर, निर्भय वीर होकर तुम्हारे सच्चे उपासक बनेंगे, सब काम-क्रोधादि मलिनताओं को दूर करके शुद्ध-सुरूप बनकर तुम्हारी आराधना करने बैठेंगे और दिन-रात निरन्तर सेवा-कार्य करते हुए ही अब हम प्रातः सायं तुम्हारा भजन किया करेंगे। सचमुच तभी हम तुम्हारे पास बैठने के योग्य होंगे, तुम्हारी उपासना करने के अधिकारी बनेंगे और तभी उपासना द्वारा तुमसे अमृतत्व आदि आध्यात्मिक ऐश्वर्यों को, वीरता आदि सद्गुणों को तथा अन्य भौतिक ऐश्वर्यों को भी प्राप्त कर सकेंगे।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भारतीय वैदिक संस्कृति में सम्मानित भगवा वस्त्रों का पादरियों द्वारा धर्मान्तरण के लिए अनैतिक प्रयोग

भारत देश में भगवा पादरी : षड़यन्त्र या आस्था ?

अगर बात रंग की हो तो भगवा रंग हिन्दू धर्म में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। इस रंग को साधु-संत धारण करते हैं, रंग ऐसा है जिसे देखते ही हमारे मन में उक्त व्यक्ति के प्रति आस्था स्वतः ही पैदा हो जाती है। हमारे शास्त्रों में अग्नि देवता देवता, त्याग का महत्व, ज्ञान का दाता, अग्नि के सबसे करीब भगवा रंग को माना गया है। ऐसा माना जाता है कि पुराने जमाने में जब साधु-संत एक आश्रम से दूसरे आश्रम में जाया करते थे तब अपने साथ अग्नि लेकर चलते थे। समय के साथ-साथ अग्नि का प्रतीक भगवा ध्वज ले जाने लगे। धीरे-धीरे भगवा रंग हिन्दू धर्म का प्रतीक बनता चला गया। लेकिन अब सावधान रहिये भगवा रंग की आड़ में एक बड़ा खेल हमारे साथ खेला जा रहा है और यह खेल खेलने वाले हमारे साधु-संत नहीं बल्कि दुनिया भर में सफेद चोगे में दिखने वाले पादरी भारत में भगवा पादरी बने घूम रहे हैं।

पिछले दिनों एक-एक करके कई रिपोर्ट सामने आई, एक तो बिहार में हिन्दू परिवार की बहन, बेटियों को प्यार के जाल में फँसाकर उनसे शादी कर ईसाई मजहब अपनाने के लिए मजबूर किया जा रहा है, वहाँ इस ईसाई लव जिहाद के एक-दो नहीं बल्कि कई मामले सामने आए हैं। दूसरा भगवा रंग पहनकर बिहार के सीमावर्ती जिले सीतामढ़ी और शिवहर में धर्मांतरण गिरोह के सदस्यों की सक्रियता से स्थिति तनावपूर्ण बन गई है। गरीब और अशिक्षित लोगों को लालच देकर, बरगला कर, उनका धर्म परिवर्तन कराने के कई मामले सामने आ रहे है। इसमें सीतामढ़ी के रीगा, मेजरगंज, रुन्नीसैदपुर, बथनाहा, परिहार और शिवहर के पुरनहिया में झांसा देकर धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा है। या कहिये कि जीवन बदलने और दुखों से मुक्ति दिलाने के नाम पर लंबे समय से धर्मांतरण का खेल चल रहा है।

पंजाब के बाद बड़े पैमाने पर यह धंधा पूरे बिहार में चल रहा है। आसपास के सटे सभी राज्यों में एंटी कंवर्जन लॉ लागू है, मगर बिहार नौ राज्यों से घिरा अकेला राज्य है जहां धर्मांतरण निरोधी कानून लागू नहीं है। ऐसे में इससे सियासी हलचल भी बढ़ रही है और सामाजिक और धार्मिक हलचल भी। सवाल बन रहा है कि आखिर भगवा रंग में रंगे इन शिकारी पादरियों को दूर से कैसे पहचाने?

असल में पिछले कई वर्षो से लाल चोगा धारण किये अनेकों पादरी दावा कर रहे है कि आने वाले समय में सम्पूर्ण भारत जीसस का दरबार होगा। कैसे होगा! इसका बेस क्या है? और किस आधार पर यह लोग खुले मंच से ऐसे दावे कर रहे हैं? इन सब प्रश्नों के उत्तर अतीत से समझे जा सकते हैं। दरअसल 8 नवम्बर साल 1999 में जब राजधानी के नेहरू स्टेडियम में रोशनी के त्योहार दिवाली के मौके पर जब इसाइयों के सबसे बड़े धर्मगुरु पोप जॉन पॉल द्वितीय ने भरे मंच से कहा था- "कैथोलिक चर्च ने पहली सहस्राब्दी में यूरोप में, दूसरी सहस्राब्दी में अफ्रीका में और अमेरिका में जड़ें जमा ली थी। अब तीसरी ईसाई सहस्राब्दी इस विशाल और महत्वपूर्ण महाद्वीप पर जीसस की फौज की बड़ी फसल का गवाह बने और एशिया समेत भारत में ईसाइयत फ़ैलाने में पूरी ताकत लगा दे।"

बस फिर धर्मांतरण का पूरा खेल शुरू हुआ। नतीजा आज मधेपुरा के कई गाँवों में ईसाई आबादी 40 से 60 फीसदी तक जा पहुँची। एक खास एजेंडा के तहत पंजाब छतीसगढ़, यूपी, झारखण्ड समेत बिहार जैसे राज्यों में धर्मांतरण का खेल खेला जा रहा है। आंकड़े बताते हैं कि बिहार में ईसाइयों की संख्या में 143.23 प्रतिशत तक ग्रोथ हुआ है।

बिहार में कई ऐसे जिले हैं, जहां ईसाइयों की संख्या 1991 में महज 40 थी, वहां

..... ईसाई मिशनरी विदेशी पैसे का इस्तेमाल करते हुए पिछले सात दशकों में उत्तर-पूर्व के आदिवासी समाज का बड़े पैमाने पर धर्मांतरण करा चुके हैं। यही सब मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्रों में भी चल रहा है, जहां इन गतिविधियों का फायदा नक्सली भी उठाते हैं। विदेशी पैसे का धर्मांतरण के लिए इस्तेमाल देश की सुरक्षा और स्थिरता के लिए बड़ी चुनौतियों को जन्म दे रहा है। विकसित पाश्चात्य ईसाई देशों की सरकारें धर्मांध कट्टरपंथी ईसाई मिशनरी तत्वों को धर्म परिवर्तन के नाम पर एशिया और अफ्रीका जैसे देशों को निर्यात करती रहती हैं। इससे दो तरह के फायदे होते हैं। एक तो इन कट्टरपंथी तत्वों का ध्यान गैर ईसाई देशों की तरफ लगा रहता है, जिस कारण वे अपनी सरकारों के लिए कम दिक्कतें पैदा करते हैं और दूसरे, जब भारत जैसे देशों में विदेशी चंदे से धर्मांतरण होता है, तो धर्मांतरित लोगों के जरिये विभिन्न प्रकार की सूचनाएं इकट्ठा करने और साथ ही सरकारी नीतियों पर प्रभाव डालने में आसानी होती है। .....

आज इनकी संख्या हजारों में है। आंकड़ों की बात करें तो 1971-1981 में हुए जनगणना के अनुसार ईसाइयों की आबादी का बिहार में 8.79 प्रतिशत ग्रोथ था। 1971 में ईसाइयों की जनसंख्या 34448 थी, जो 1981 में बढ़कर 37453 हो गई।

हालांकि 1991 में इनकी जनसंख्या घटकर 30970 हो गयी थी। लेकिन पॉप का आदेश आते ही धर्मांतरण गैंग ने पूरी ताकत लगा दी और वर्ष 2001 के जनगणना के अनुसार इनकी आबादी बढ़कर 53137 हो गई। ग्रोथ रेट 71.57 प्रतिशत हो गया। 2011 में हुए जनगणना के अनुसार बिहार में ईसाइयों की आबादी 129247 हो गई और ग्रोथ रेट बढ़कर 143.23% हो गया। जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ग्रोथ सिर्फ 15.52 प्रतिशत था।

बिहार के कई ऐसे जिले हैं जहां ईसाइयों की आबादी में हुई वृद्धि चौंकाने वाली हैं। 1991 में मधुबनी जिले में जनगणना के अनुसार कुल 40 ईसाई थे। 2001 में इनकी संख्या 190 हुए और 2011 में इनकी संख्या बढ़कर 3262 हो गई । इनका प्रतिशत देखे तो 8.55 फीसदी जनसंख्या में वृद्धि हुई है। दरभंगा में 1991 में 141 थे। 2001 में इनकी संख्या बढ़कर 781 हो गई और 2011 में 3534 हो गयी। इनका प्रतिशत देखे तो 2406.38 %, खगड़िया में 1991 में सिर्फ 27 ईसाई थे। जिसके बाद 2001 में इनकी संख्या 104 हुई और 2011 में 1253. ग्रोथ रेट 4540.74% हो गया। शेखपुरा में 1991 में सिर्फ 14 ईसाई थे। 2001 में इनकी संख्या बढ़कर 375 हुई और 2011 में 313 हुई। इनका वृद्धि प्रतिशत 2135.71 है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

खाण्डव वन

गतांक से आगे -

पन्दू-धर्म ने प्रत्याक्रमण करने का यत्न न करके आत्मरक्षा के लिए खाई खोदी, दीवार चुनी; यहां तक कि दम घुटने लगा, उचित भोजन के अभाव से ढांचा ढीला होने लगा, अंग से अंग अलग हो गया। हारे हुए, घिरे हुए, भूे किले में सदा पफूट पड़ जाया करती है। हिन्दू-धर्म के घिरे हुए किले में भी पफूट पड़ गई। परिणामत: अनगिनत मत और सम्प्रदाय उत्पन्न हो गए जिनकी अधिक संख्या का अनुमान इसी से लग सकता है कि वैष्णव, ञौव और ञात्तफ इन तीन बड़े पन्थों में से केवल

वैष्णव मत के ही निम्नलिति 20 सम्प्रदाय थे जो एक-दूसरे को झूठा मानते और कहते थे-

(1) श्री सम्प्रदाय, (2) वल्लभाचारी, (3) मध्वाचारी या ब्रह्म सम्प्रदाय, (4) सनकादिक सम्प्रदाय या नीमावत, (5) रामानन्दी या रामावत, (6) राधावल्लभी, (7) नित्यानन्दी, (8) कबीरपन्थी, (9)धकी, (10) मलूकदासी, (11) दादूपन्थी, (12) रमदासी, (13) सेनाई, (14) मीराबाई, (15) सखीभाव, (16) चरणा दासी, (17) हरिश्चन्द्री (18) साधनापन्थी, (19) माधवी, (20) वैरागी और नागे संन्यासी।

शैवों के 7 बड़े भेद थे-

(1) संन्यासी दण्डी आदि, (2) योगी, (3) जंगम, (4) ऊर्ध्वबाहु, (5) गूदड़, (6) रू ड़, (7) कड़ालिंगी।

शाक्तिकों के बड़े भेद निम्न थे-

(1) दक्षिणाचारी, (2) वामी, (3) कानचेलिये, (4) करारी, (5) अघोरी, (6) गाणपत्य, (7) सौरपत्य (8) नानकपन्थी, (9) बाबा लालो, (10) प्राणनाथी, (11) साध, (12) सन्तनामी, (13) शिवनारायणी, (14) शून्यवादी। ('आर्य दर्पण' जून 1880 ई)

तालिका यह दिखाने के लिए उद्धृत की गई है कि 19वीं शताब्दी के मध्य में हिन्दू धर्म का ढांचा किस प्रकार से बिगड़ चुका था। भेद बेहद बढ़ गए थे। अनाचार पूरे जोर पर था। धर्म की प्रेरिका शक्ति जाती रही थी।

भारत का प्राचीन आर्य-धर्म जब इस सड़ांध की दशा में था, तब देश पर चौथे विदेशी तूफान का आक्रमण हुआ। यूरोपियन जातियां आखेट भूमि की टोह लगाती हुई भारत के समुद्र समीपवर्ती सीमाप्रान्तों पर आ पहुंचीं। उन्हें किस प्रकार देश में प्रवेश मिला, किस प्रकार देश की बिगड़ी हुई दशा ने उन्हें यहां आधिपत्य जमाने में सहायता दी, किस प्रकार अन्य शक्तियों को परास्त करके अंग्रेजों ने प्रभुत्व जमाने में सपफलता प्राप्त की- ये सब विषय राजनैतिक इतिहास के हैं। हमें यहां यह देखना है कि यूरोपियन सफलता का प्रभाव भारत के धार्मिक विचारों पर किस प्रकार पड़ा। यूरोपियन जातियां अपने साथ दो वस्तुएं लाई-ईसाइयत और पाश्चात्य सभ्यता। इन दोनों का भारत पर एक साथ असर हुआ। इस्लाम तलवार के साथ आया था, वह बड़े वेग से फैला, परन्तु उसका प्रतिरोध भी उसी वेग से हुआ। ईसाइयत का प्रचार दूसरी विधि से हुआ। उस विधि में शिक्षणालय, प्रचार का संगठन और प्रलोभन ये तीन साधन प्रधान थे। ईसाइयों ने स्कूल और कॉलेज खोलकर भारत के शिक्षित समाज को खोखला कर देने का यत्न किया। कुछ काल तक उस यत्न में सफलता भी मिली। ईसाइयों का प्रचार-सम्बन्धी संगठन पहले ही बहुत बढ़िया था, भारत के अनुभव से उसमें

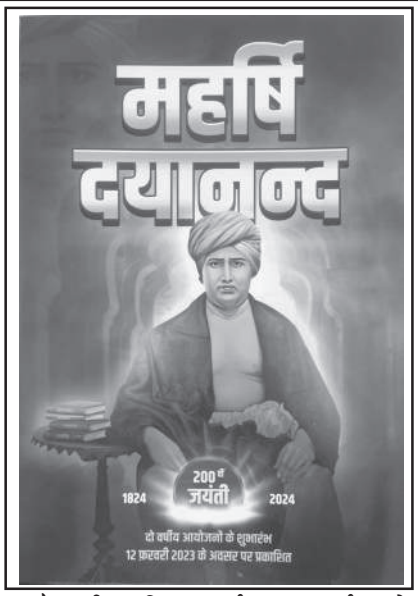

और भी अधिक पूर्णता आ गई। जो भारतवासी ईसाई बन गए, वे चाहे किसी भी दर्जे के थे, सरकारी नौकरियों में उन्हें तरजीह दी जाने लगी। इस प्रकार ईसाई धर्म धीरे-धीरे परन्तु निश्चित रूप से देश की जड़ों में प्रवेश करने लगा। - ***क्रमश:***

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

स्वास्थ्य चर्चा

स्वास्थ्य के प्रति हर क्षण सजग रहें

आयुर्वेद में सबसे अधिक महत्त्व शरीर की रक्षा और इसका उचित विधि से पालन किए जाने को दिया है। चरक संहिता में कहा गया है-**अन्य सभी सांसारिक कार्यों को छोड़कर शरीर का सही पालन अति आवश्यक है, वरना इसके अभाव (खात्मा) हो जाने पर सभी वस्तुओं का अभाव हो जाता है।** बात है भी सही, अगर हमारा शरीर ही न रहा तो हमारे लिए यह दुनिया काम की नहीं रहेगी, क्योंकि तब **'हम मरे जग डूबा'** वाली स्थिति हो जाएगी। एक कहावत है कि **'जान है तो जहान है'** और जान इस शरीर में ही रहती है। शरीर ही न रहे तो जान कहां रहेगी? जैसे हम जिस मकान में रहते हैं, उसे साफ-सुथरा, मजबूत और रंग-रोगन करके अच्छी हालत में रखते हैं, वैसे ही यह शरीर हमारे जीवात्मा का मकान है, जिसे हम 'मैं' या 'हम' कहते हैं। **हमारे मकान की तरह इस शरीर को साफ-सुथरा, निरोग, मजबूत रखने का प्रयत्न करना ही स्वास्थ्य की रक्षा है।** हमारा प्रथम कर्त्तव्य शरीर और स्वास्थ्य की रक्षा करना ही होना चाहिए, लेकिन आमतौर पर देखने में यही आता है कि लोग दुनिया के काम-काज और प्रपंच में इतने व्यस्त कि शरीर और स्वास्थ्य की रक्षा के विषय में सोच ही नहीं पाते, करना-धरना तो दूर की बात है। **अगर कोई उनको कहे तो कहते हैं कि मरने तक की तो फुरसत नहीं और शरीर और स्वास्थ्य की फिक्र रखने की बात करते हो, यूं ही क्या कम फिक्र हैं करने के लिए?**

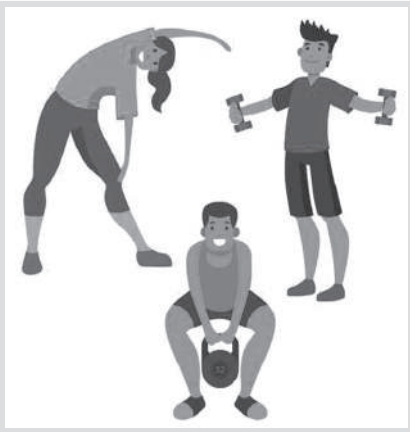

चरक संहिता में कहा गया है-अन्य सभी सांसारिक कार्यों को छोड़कर शरीर का सही पालन अति आवश्यक है, वरना इसके अभाव (खात्मा) हो जाने पर सभी वस्तुओं का अभाव हो जाता है। बात है भी सही, अगर हमारा शरीर ही न रहा तो हमारे लिए यह दुनिया काम की नहीं रहेगी, क्योंकि तब 'हम मरे जग डूबा' वाली स्थिति हो जाएगी। एक कहावत है कि 'जान है तो जहान है' और जान इस शरीर में ही रहती है। शरीर ही न रहे तो जान कहां रहेगी? जैसे हम जिस मकान में रहते हैं, उसे साफ-सुथरा, मजबूत और रंग-रोगन करके अच्छी हालत में रखते हैं, वैसे ही यह शरीर हमारे जीवात्मा का मकान है, जिसे हम 'मैं' या 'हम' कहते हैं। हमारे मकान की तरह इस शरीर को साफ-सुथरा, निरोग, मजबूत रखने का प्रयत्न करना ही स्वास्थ्य की रक्षा है।

ऐसे लोग तब तक फिक्र नहीं करते, जब तक चारपाई पर नहीं पड़ जाते। जब तक चलती है, चलाते रहते हैं। **जैसे जब तक छाछ गाढ़ी रहे तब तक उसमें पानी मिलाने से फर्क मालूम नहीं पड़ता, लेकिन जब पानी की मात्रा ज्यादा हो जाती है तब आंखें खुलती हैं, वैसे ही शरीर की दुर्दशा हो जाने पर होता है।** आदमी जब तक चारपाई पर नहीं पड़ जाता, बल्कि कभी-कभी तो चारपाई खड़ी होने की भी नौबत आ जाती है और जब जान के लाले पड़ जाते हैं, तब आंखे खुलती हैं, लेकिन तब वही स्थिति आ जाती है **'अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत'** हम शरीर की कद्र न कर सके, इसका मूल्य न समझ सके और इसकी दशा बिगाड़ लें, फिर सम्हलें भी तो इससे क्या फायदा होगा? **सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या?** ज्यादातर ऐसा तो होता है कि हमें किसी चीज की कीमत तभी मालूम होती है जब वह चीज खत्म होने वाली है या खत्म हो चुकी होती है। इस विषय में हम एक उदाहरण प्रस्तुत हैं।

एक बार एक राजा शिकार के पीछे घोड़ा दौड़ाता हुआ रास्ता भटक गया। उसके अंगरक्षक और संगी-साथी बिछड़ गए। वह काफी देर तक भटकता रहा, पर उसे जंगल से बाहर निकलने की कोई राह न मिली। वह भूख-प्यास से व्याकुल हो उठा। यहां तक कि प्यास से व्याकुल होकर उसका घोड़ा बेसुध होकर गिर पड़ा। राजा की हालत भी खराब हो रही थी। गला सूख गया और जीभ में कांटे से चुभते मालूम हो रहे थे। वह पानी की तलाश में जैसे-तैसे पैदल ही भटकने लगा।

अचानक उसे एक कुटिया दिखाई दी। उसकी जान में जान आई और गिरता-पड़ता कुटिया के सामने पहुंचा और पानी-पानी पुकारता हुआ गिर पड़ा। उसकी पुकार सुनकर कुटिया से एक संन्यासी बाहर आया। सामने पड़े हुए व्यक्ति की वेश-भूषा और भव्य-व्यक्तित्व को देखकर संन्यासी पहचान गया कि यह राजा है। संन्यासी ने उसे सहारा देकर उठाया और आसन पर बिठाया। राजा उसे व्याकुल नजरों से देखता हुआ बोला-मुझे पानी दीजिए, दो घूंट पानी दीजिए, वरना मेरे प्राण निकल जाएंगे।

राजा को शिक्षा देने के उद्देश्य से संन्यासी बोला-आप तो राजा मालूम होते हैं। मैं आपको पानी दूं तो बदले में आप मुझे क्या देंगे? राजा तो प्यास के मारे तड़प रहा था, सो बोला-मारे प्यास के मेरी जान पर आ बनी है। आप जो कहे सो मैं देने को तैयार हूं। मुझे पानी दीजिए। आप मेरी जान बचाइए। आप यह सब जेवर ले लीजिए। इतना कहकर राजा अपने गले में पहने हुए मोती और पन्ने के आभूषण उतारने लगा, तो संन्यासी ने उसको रोकते हुए कहा-आपने पानी का मूल्य कम लगाया है। आपकी जान बचाने वाले पानी के मुकाबले में ये जेवर इतने मूल्यवान नहीं। राजा बोला-मैं अपना आधा-राज्य आपको दूंगा, पानी दीजिए। संन्यासी बोला-आपकी जान के बदले आपका आधा राज्य? राजन् ! यह उचित मूल्यांकन नहीं। आधे-राज्य के बदले में भी पानी नहीं दूंगा। राजा बोला पानी न मिला तो मैं मर जाऊंगा, फिर राज्य मेरे किस काम का। आप पूरा राज्य ले लें, पर अब पानी देकर मेरे प्राण बचाएं।

संन्यासी मुस्कराया और बोला राजन्! मैं राज्य लेकर क्या करूंगा, मैं तो पहले ही सब छोड़-छाड़ चुका हूं। मैं तो आपको यह समझाना चाहता था कि जो कुछ भी धन-वैभव आदि आपके पास है, उसका मूल्य और उपयोग एक लोटे भर पानी के

- ***शेष पृष्ठ 7 पर***

महर्षि का 200वां जन्मोत्सव : एतिहासिक कार्यों का स्मरणोत्सव

महर्षि दयानन्द और युगान्तर

- महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

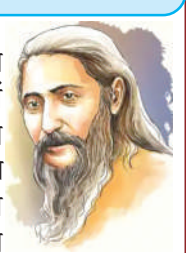

19वीं सदी भारत के इतिहास का अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन-चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर, इस समय, इस पुण्य भूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्हीं में एक महाप्रतिभा मंडित महापुरुष हैं। हम देखते हैं, हमें इतिहास भी बतलाता है, समय की एक आवश्यकता होती है। उसी के अनुसार धर्म अपना स्वरूप ग्रहण करता है। हम अच्छी तरह जानते हैं, ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बन्धन से बाहर है और चूंकि वेदों में मनुष्य जाति की प्रथम तथा चिरन्तन ज्ञान-ज्योति स्थित है, इसलिए उसके परिवर्तन की आवश्यकता सिद्ध नहीं होती, बल्कि परिवर्तन भ्रमजन्य भी कहा जा सकता है। पर साथ-साथ, महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में दीख पड़ता है उसका प्राय: सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहां इसी समाज से श्रीगणेश हुआ है। भिन्न जातिवाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्यसमाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले- जिले, कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्यसमाज की स्थापना हो गई। राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी स्वामीजी एक प्रवर्तक हैं और आर्यसमाज के प्रचार की तो

19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती सम्पूर्ण मानवजाति के लिए अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का उत्सव है। क्योंकि जिस कालखंड में महर्षि का प्रादुर्भाव हुआ तब अज्ञान और अविद्या का अंधेरा चारों ओर छाया हुआ था। भारत माता परतंत्रता की बेडियों में जकड़ी हुई थी, विश्व गुरु कहलाने वाला हमारा भारत देश ऐसी विषम परिस्थितियों में फंसा हुआ था कि वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता, संस्कार और सब कुछ लगातार विकृत होते जा रहे थे। उस समय जब हम अपने असतित्व को भूलते जा रहे थे, तब महर्षि दयानंद ने अपने तप, त्याग, साधना पूर्ण कार्यों से एक नए युग का आगाज किया। महर्षि की प्रेरणा से ही भारत माता को आजादी मिली थी। महर्षि के क्रांतिकारी भाषणों और संदेशों से ही भारत की युवा पीढ़ी में क्रांति का जोश आया था और हजारों नहीं, लाखों क्रांतिकारियों भारत की स्वतंत्रता के लिए हंसते हंसते फांसी के फंदे चूमे थे। आज जो हमारा देश लगातार आगे बढ़ रहा है, भारत का मान-सम्मान और गुणगान पूरा विश्व कर रहा है, उसके पीछे महर्षि दयानंद की सोच, उनके सेवा कार्य, उनका चिंतन-मनन सहित परिश्रम और पुरुषार्थ ही है।

यूं तो महर्षि के अदभुत और अनुपम जीवन पर हजारों विश्व विख्यात लेखकों ने अपने उदगार प्रस्तुत किए हैं, लेकिन हमारा मानना है कि महर्षि का बहुआयामी व्यक्तित्व और लोकोपकारी कृतित्व इतना विशाल और विराट है कि उसे पूर्णतया लिख पाना असंभव तो नहीं किंतु अत्यंत कठिन अवश्य है। महर्षि दयानंद जी की 200वीं जयंती पर आर्य संदेश में उनके जीवन पर आधारित प्रेरक लेखों की नियमित श्रंखला आरम्भ रहे हैं। इस अंक में प्रस्तुत है-विश्व विख्यात चिंतक और लेखक, महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी के उदगार

इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि उच्चतम ज्ञान किसी भी भाषा में हो, वह अपौरुषेय वेद ही है। परिवर्तन उसके व्यवहार -कौशल, कर्म-काण्ड आदि में होता है, हुआ भी है। इसे ही हम समय की आवश्यकता कहते हैं। भाषा जिस प्रकार अर्थ-साम्य रखने पर भी स्वरूपत: बदलती गई है, अथवा भिन्न देशों में, भिन्न परिस्थितियों के कारण अपर देशों की भाषा से बिल्कुल भिन्न प्रतीत होती है। इसी प्रकार धर्म भी समयानुसार जुदा-जुदा रूप ग्रहण करता गया है। भारत के लिए वह विशेष रूप से कहा जा सकता है। बुद्ध, शंकर, रामानुज आदि के धर्म-प्रवर्त्तन सामयिक प्रभाव को ही पुष्ट करते हैं। पुराण इसी विशेषता के सूचक हैं। पौराणिक विशेषता और मूर्तिपूजन आदि से मालूम होता है, देश के लोगों की रुचि अरूप से रूप की ओर ज्यादा झुकी थी। इसीलिए वैदिक अखण्ड ज्ञान राशि को छोड़कर ऐश्वर्य युगपूर्ण एक-एक प्रतीक लोगों ने ग्रहण किया। इस तरह देश की तरक्की नहीं हुई, यह बात नहीं। पर इस तरह देश ज्ञानभूमि से गिर गया, यह बात भी है। जो भोजन शरीर को पुष्ट करता है, वही रोग का भी कारण होता है। मूर्तिपूजन से इसी प्रकार दोषों का प्रवेश हुआ। ज्ञान जाता रहा। मस्तिष्क से दुर्बल हुई जाति औद्धत्य के कारण छोटी-छोटी स्वतन्त्र सत्ताओं में छँटकर एक दिन शताब्दियों के लिए पराधीन हो गई। उसका वह मूर्तिपूजन-संस्कार बढ़ता गया, धीरे-धीरे वह ज्ञान से बिल्कुल ही रहित हो गई। शासन बदला, अंग्रेज आए। संसार की सभ्यता एक नये प्रवाह से बही। बड़े-बडे पण्डित विश्व-साहित्य, विश्व-ज्ञान, विश्व-मैत्री की आवाज उठाने लगे, पर भारत उसी प्रकार पौराणिक रूप के मायाजाल में भूला रहा। इस समय ज्ञान-स्पर्धा के लिए समय की फिर आवश्यकता हुई और महर्षि दयानन्द का यही अपराजित प्रकाश है। वह अपार वैदिक ज्ञान राशि के आधार-स्तम्भ- स्वरूप अकेले बड़े-बड़े पण्डितों का सामना करते हैं। एक ही आधार से इतनी बड़ी शक्ति का स्फुरण होता है कि आज भारत के युगान्तर साहित्य में इसी की सत्ता प्रथम है, यही जनसंख्या में बढ़ी हुई है।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महाराज में प्राप्त होते हैं, उनका लेशमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा-संभूत नहीं, पुन: ऐसे आर्य में ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इसके उदाहरण हैं। मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खण्डन हैं। महर्षि दयानन्दजी से बढ़कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। यही वैदिक ज्ञान की मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है, यही आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।

यहाँ से भारत के धार्मिक इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होता है, यद्यपि वह बहुत प्राचीन है। हमें अपने सुधार के लिए क्या-क्या करना चाहिए, हमारे सामाजिक उन्नयन में कहाँ-कहाँ और क्या-क्या रुकावटें, हमें मुक्ति के लिए कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्यसमाज की प्रतिष्ठा भारतीयों में एक नये जीवन की प्रतिष्ठा है, उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओं, पतितों तथा जाति-पाँति के भेद-भाव मिटाने के लिए यह भाषा ही रही है। शिक्षण के लिये 'गुरुकुल' जैसी संस्थाएं निर्मित की गईं। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा।

स्वामीजी के प्रचार के कुछ पहले ब्रह्मसमाज की कलकत्ता में स्थापना हुई थी। राजा राममोहन राय द्वारा प्रवर्तित ब्राह्म-धर्म की प्रतिष्ठा, वैदान्तिक बुनियाद पर, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर कर चुके थे। वहाँ इसकी आवश्यकता इसलिये हुई थी कि अंग्रेजी सभ्यता की दीप-ज्योति की ओर शिक्षित नवयुवकों का समूह पतंगों की तरह बढ़ रहा था, पुन: शिक्षा तथा उत्कर्ष के लिये विदेश की यात्रा अनिवार्य थी, इसलिए लौटने पर वे शिक्षित युवक यहाँ ब्राह्मणों द्वारा धर्म-भ्रष्ट कहकर समाज से निकाल दिये जाते थे, इसलिए वे ईसाई हो जाते थे, उन्हें देश के ही धर्म में रखने की जरूरत थी। इसी भावना पर ब्राह्मधर्म की प्रतिष्ठा तथा प्रसार हुआ। विलायत में प्रसिद्धि प्राप्त कर लौटने वाले प्रथम भारतीय वक्ता श्रीयुत केशवचन्द्र सेन भी ब्राह्मधर्म के प्रवर्तकों में एक हैं। इन्हीं से मिलने के लिए स्वामीजी कलकत्ता गये थे। यह जितने अच्छे विद्वान् अंग्रेजी के थे, इतने अच्छे संस्कृत के न थे। इनसे बातचीत में स्वामीजी सहमत नहीं हो सके। कलकत्ता में आज ब्राह्मसमाज मन्दिर के सामने कार्नवालिस स्ट्रीट पर विशाल आर्यसमाज मन्दिर भी स्थित है।

> ***....देश में विभिन्न मतों का प्रचलन उसके पतन का कारण है, स्वामी दयानन्दजी की यह निर्भ्रान्त धारणा थी। उन्होंने इन मत-मतान्तरों पर सप्रमाण प्रबल आक्षेप भी किये हैं। उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञान-पंक से देश को निकालकर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक कर दें। वाममार्ग वाले तान्त्रिकों की मन्द वृत्तियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है कि मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन आदि वेद-विरुद्ध महाअधर्म कार्यों को वाममार्गियों ने श्रेष्ठ माना है। जो वाममार्गी कलार के घर बोतल पर बोतल शराब चढ़ावें और रात्रि को वारांगना से दुष्कर्म करके उसी के घर सोवें, वह वाममार्गियों में श्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा के समान हैं। स्त्रियों के प्रति विशद कोई भी विचार उनमें नहीं। स्वामीजी देशवासियों को विशुद्ध वैदिक धर्म में दीक्षित हो आत्मज्ञान ही-सा उज्जवल और पवित्र कर देना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द ने भी वामाचार-भक्त देश के लिये विशुद्ध भाव वाले वैदान्तिक धर्म का उपदेश दिया है। आपने गुरु परम्परा को भी आड़े हाथों लिया है। योगसूत्र के 'स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्' के अनुसार, आप केवल ब्रह्म को ही गुरु स्वीकार करते हैं। रामानुज जैसे धर्माचार्य का भी मत आपको मान्य नहीं, और बहुत कुछ युक्तिपूर्ण भी जान पड़ता है। आपका कहना है कि लक्ष्मीयुक्त नारायण की शरण जाने का मन्त्र धनाढ्य और माननीयों के लिए बनाया गया- यह भी एक दुकान ठहरी।.....***

किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ उपकार देश तथा जाति का हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ही हमारे सामने रक्खा। हम आर्य हों, हिन्दू हों, ब्राह्मसमाज वाले हों, यदि हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते हैं, तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित करा दिया।

देश में विभिन्न मतों का प्रचलन उसके पतन का कारण है, स्वामी दयानन्दजी की यह निर्भ्रान्त धारणा थी। उन्होंने इन मत-मतान्तरों पर सप्रमाण प्रबल आक्षेप भी किये हैं। उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञान-पंक से देश को निकालकर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक कर दें। वाममार्ग वाले तान्त्रिकों की मन्द वृत्तियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है कि मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन आदि वेद-विरुद्ध महाअधर्म कार्यों को वाममार्गियों ने श्रेष्ठ माना है। जो वाममार्गी कलार के घर बोतल पर बोतल शराब चढ़ावें और रात्रि को वारांगना से दुष्कर्म करके उसी के घर सोवें, वह वाममार्गियों में श्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा के समान है। स्त्रियों के प्रति विशद कोई भी विचार उनमें नहीं। स्वामीजी देशवासियों को विशुद्ध वैदिक धर्म में दीक्षित हो आत्मज्ञान ही-सा उज्जवल और पवित्र कर देना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द ने भी वामाचार-भक्त देश के लिये विशुद्ध भाव वाले वैदान्तिक धर्म का उपदेश दिया है। आपने गुरु परम्परा को भी आड़े हाथों लिया है। योगसूत्र के **'स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्'** के अनुसार, आप केवल ब्रह्म को ही गुरु स्वीकार करते हैं। रामानुज जैसे धर्माचार्य का भी मत आपको मान्य नहीं, और बहुत कुछ युक्तिपूर्ण भी जान पड़ता है। आपका कहना है कि लक्ष्मीयुक्त नारायण की शरण जाने का मन्त्र धनाढ्य और माननीयों के लिए बनाया गया- यह भी एक दुकान ठहरी।

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्यसमाज द्वारका का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज द्वारका, दिल्ली का 5वां वैदिक वार्षिकोत्सव 17 से 19 नवम्बर तक श्री गोरखनाथ मंदिर, सेक्टर-7, द्वारका में मनाया गया। वार्षिकोत्सव के तीनों दिन देव यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें युवा गृहस्थ यजमान बनें। श्री रोहित शास्त्री जी ने यज्ञ के उपब्रहमा का दायित्व सुंदर रीति से पूर्ण किया। वार्षिकोत्सरव के तीन सत्रों मे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. वागीश जी ने वेद और वैदिक चिन्तन से संबंधित विभिन्नि विषयों पर अपने विचार रखे और मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के अन्य सत्रो में युवा वैदिक विदुषी डॉ. प्रज्ञा और विद्वान आचार्य हरिप्रसाद जी ने विभिन्न सामयिक और वैदिक विषयों पर अपना उदबोधन दिया। कार्यक्रम में भजनोपदेशक के रूप में श्रीमती सुदेश आर्या और श्री देव आर्य जी ने ईश्वर भक्ति और ऋषिवर देव दयानंद पर अपने मधुर भजनों से आनंदित किया। उत्सव के आखिरी दिन वैदिक विद्वान श्री सच्चिदानंद जी का विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ। आपने गुरुकुल के शिष्यों के साथ वैदिक यज्ञ की पुर्णाहुति संपन्न कराई और अपने चिन्तन से मार्गदर्शन किया। उत्सव के समापन दिवस पर 19 नवम्बर को बच्चों के लिए 'आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 15 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दिन आर्य गुरुकुल तिहाड ग्राम के बच्चों ने योगासनों और व्यायाम की विशेष प्रस्तुति दी।

वार्षिकोत्सव के दौरान आर्य समाज द्वारका की भूमि खरीदने में विशेष आर्थिक योगदान देने वाली आर्य समाजों, वेद प्रचार मंडल के पदाधिकारियों तथा व्यक्तियों को विशेष तौर पर सम्मानित किया गया।

- विनोद कालरा, मन्त्री

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली में
नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन सम्पन्न

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकास पुरी, नई दिल्ली में सौन्दर्यकरण एवं नवीनीकरण के उपरान्त नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन 26 नवम्बर, 2023 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर रहेजा इंफ्रा के श्री बिरेश रहेजा भी उपस्थित रहे।

उद्घाटन से पूर्व सभा महामन्त्री जी के ही ब्रह्मत्व में विधिवत् यज्ञ सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज के मन्त्री श्री डालेश त्यागी जी को उनके जन्मदिवस की बधाई और निर्माण कार्य के लिए आर्यसमाज की पूरी टीम को शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने उत्साह के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया।- **मन्त्री**

आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार हरिनगर नई दिल्ली का
वार्षिकोत्सव भजन-प्रवचन एवं प्रतियोगिताओं के साथ सम्पन्न

आर्य समाज एल ब्लॉक आनंद विहार हरि नगर का वार्षिक उत्सव 22 से 26 नवंबर 2023 तक आर्य समाज प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अथर्ववेद का आंशिक यज्ञ किया गया तथा 22 नवंबर को आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रतिदिन शाम को 6:30 बजे से 8:30 तक पंडित नरेंद्र आर्य के प्रेरणादायक भजन तथा आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी के प्रेरणादायक उपदेश सबका मन मोहते रहे।

समापन समारोह के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने बहुत ही ज्ञानवर्धक बातें बताई, जिसमें संस्कृत के महत्व के बारे में चर्चा की गई।इसके बाद पंडित नरेंद्र आर्य के भजन तथा अंत में आचार्य शिवा शास्त्री जी का सारगर्भित प्रवचन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री यशपाल आर्य प्रधान आर्य समाज महावीर नगर ने की। इस अवसर पर कार्यक्रम के अंत में बालकों की प्रतियोगिता में विजेता बालकों को श्री राजेंद्र पाल हंस एवं श्रीमती सरोज हंस ने पुरस्कार वितरण किया। प्रतिदिन 100 से ऊपर की संख्या कार्यक्रम में उपस्थिति रही। समापन समारोह के दिन हाल पूरा भरा था परंतु विवाहों का सीजन होने के कारण संख्या में कुछ प्रभाव रहा तथापि 200 से ऊपर लोगों ने ऋषि लंगर का आनंद उठाया। मंत्री श्री महेंद्र सिंह जी ने इस बार अधिक से अधिक युवाओं को दैनिक यज्ञ में यजमान बनने की बधाई दी और पूर्णाहुति के दिन इतने यजमान थे की बैठने की व्यवस्था भी गड़बड़ा गई थी तथापि कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा। अंत में कार्यकारी प्रधान श्रीमती उषा सिडाना ने उपस्थित जनसमूह का तथा निकटवर्ती आर्य समाजों के अधिकारियों का अभिनंदन एवं धन्यवाद किया। *-मन्त्री*

आर्यसमाज शकूर बस्ती दिल्ली के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में
ऋग्वेद शतकम यज्ञ

आर्यसमाज गुरु हरकिशन मार्ग, रेलवे रोड शकूर बस्ती दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 9-10 दिसम्बर, 2023 को ऋग्वेद शतकम यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर भजन एवं उपदेश डॉ. कैलाश कर्मठ जी के होंगे। पूर्णाहुति एवं समापन समारोह 10 दिसम्बर को प्रात: 7:15 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक आयोजित होगा।

- सोमनाथ पुरी, प्रधान

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर अमेरिका में आर्य महासम्मेलन

200 YEARS OF MAHARSHI DAYANAND BIRTH
150 YEARS OF ARYA SAMAJ FOUNDATION
INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN
(Largest Global Summit of Arya Samaj Ever, outside India)
HOSTED BY ARYA SAMAJS OF TRI-STATE OF NEW YORK, NEW JERSEY AND CONNECTICUT

July 18-21, 2024 | New York

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक समस्त महानुभाव तत्काल रजिस्ट्रेशन कराएं
https://tinyurl.com/iams2024ny

पंजीकरण या अन्य किसी प्रकार की जानकारी/समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क करें

भारत से जाने वाले
9650183339 अथवा 9311721172

भारत के अतिरक्त अन्य देशों से जाने वाले
iams2024@aryasamaj.com

STAY TUNED FOR MORE INFORMATION : www.aryasamaj.com

पृष्ठ 4 का शेष

मूर्ति-पूजन के लिए आपका कथन है कि जैनियों की मूर्खता से इसका प्रचलन हुआ। तांत्रिक तथा वैष्णवों ने भिन्न मूर्तियों तथा पूजनोपचारों से अपनी एक विशेषता प्रतिष्ठित की है। जैनी वाद्य नहीं बजाते थे, ये लोग शंख, घण्टा, घड़ियाल आदि बजाने लगे। अवतार आदि पर भी स्वामीजी विश्वास नहीं करते। **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** आदि-आदि प्रमाणों से ब्रह्म का विग्रह नहीं सिद्ध होता, उनका कहना है।

ब्राह्मणों की ठग-विद्या के सम्बन्ध में भी स्वामीजी ने लिखा है- आज ब्राह्मणों की हठपूर्ण मूर्खता से अपरापर जातियों को क्षति पहुँच रही है। पहले पढ़े-लिखे होने के कारण ब्राह्मणों ने श्लोकों की रचना कर-करके अपने लिये बहुत काफी गुंजाइश कर ली थी। उसी के परिणाम स्वरूप वे आज तक पुजाते चले जा रहे हैं। स्वामीजी एक मन्त्र का उल्लेख करते हैं-

दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद्
ब्राह्मणदैवतम्।।

अर्थात् सारा संसार देवताओं के अधीन हैं, देवता मन्त्रों के अधीन हैं, वे मन्त्र ब्राह्मणों के अधीन हैं, इसलिये ब्राह्मण ही देवता है। लोगों से पुजाने का यह पाखण्ड बड़ी ही नीच मनोवृत्ति का परिचय है।

स्वामीजी ने शैव, शाक्त और वैष्णव आदि मतों की खबर तो ली ही है, हिन्दी-साहित्य के महाकवि कबीर तथा दादू आदि को भी बहुत बुरी तरह फटकारा है। आपका कहना है- पाषाणादि को छोड़ पलंग, गद्दी, तकिये, खड़ाऊं, ज्योति अर्थात् दीप आदि का पूजना पाषाण-मूर्ति से न्यून नहीं। क्या कबीर साहब भुनगा था, वा कली था, जो फूल हो गया? जुलाहे का काम करता था, किसी पण्डित के पास पढ़ने के लिए गया, उसने उसका अपमान किया। कहा, हम जुलाहे को नहीं पढ़ाते। इसी प्रकार कई पण्डितों के पास फिरा, परन्तु किसी ने न पढ़ाया, तब ऊट-पटाँग भाषा बनाकर जुलाहे आदि लोगों को समझाने लगा। तंबूरे लेकर गाता था, भजन बनाता था, विशेष पण्डित, शास्त्र, वेदों की निन्दा किया करता था। कुछ मूर्ख लोग उसके जाल में फँस गये। जब मर गये, तब सिद्ध बना लिया। जो-जो उसने जीते-जी बनाया था, उसको उसके चेले पढ़ते रहे। कान को मूँदकर जो शब्द सुना जाता है, उसको अनहद शब्द सिद्धान्त ठहराया। मन की वृत्ति को सूरति कहते हैं उसको उस शब्द के सुनने में लगाया, उसी को संत और परमेश्वर का ध्यान बतलाते हैं, वहाँ काल नहीं पहुँचता। बर्छी के समान तिलक और चंदनादि लकड़ी की कंठी बाँधते हैं। भला विचार के देखो, इसमें आत्मा की उन्नति और ज्ञान क्या बढ़ सकता है?

इसी प्रकार नानकजी के सम्बन्ध में भी आपने कहा है कि उन्हें संस्कृत का ज्ञान न था, उन्होंने वेद पढ़ने वालों को तो मौत के मुँह में डाल दिया है और अपना नाम लेकर कहा है कि नानक अमर हो गये- वह आप परमेश्वर है। जो वेदों की कहानी कहता है, उसकी कुल बाते कहानियाँ हैं। मूर्ख, साधु वेदों की महिमा नहीं जान सकते। यदि नानकजी वेदों का मान करते, तो उनका अपना सम्प्रदाय न चलता, न वह गुरु बन सकते थे, क्योंकि संस्कृत नहीं पढ़ी थी, फिर दूसरों को पढ़ाकर शिष्य कैसे बनाते, आदि-आदि। दादूपंथ को भी आप इसी प्रकार फटकारते हैं। शिक्षा, मार्जन तथा अपौरुषेय ज्ञान-राशि वेदों का आपका पक्ष है। मत-मतान्तरों के स्वल्प जल में यह आत्मतर्पण नहीं करते। वहाँ उन्हें महत्ता नहीं दीख पड़ती। पुनः भाषा में अधूरी कविता करके ज्ञान का परिचय देने वाले अल्पाधार साधुओं से पण्डित श्रेष्ठ स्वामीजी तृप्त भी कैसे हो सकते थे? इन अशिक्षित या अल्पशिक्षित साधुओं ने जिस प्रकार वेदों की निन्दा कर-कर मूढ़ जनों में वेदों के प्रतिकूल विश्वास पैदा कर दिया था, उसी प्रकार नव युग के तपस्वी महर्षि ने भी उन सबको धता बताया और विज्ञों को ज्ञानमय कोष वेदों की शिक्षा के लिए आमन्त्रित किया। स्वामीनारायण के मत के विषय पर आप कहते हैं-

'या शी शीतलादेवी ता शो वाहनः खरः' श्री गुसाईं जी की धन-हरणादि में विचित्र लीला है वैसी ही स्वामीनारायण की भी है।' माधव मत के संबन्ध में आपका कथन है- जैसे अन्य मतावलम्बी हैं वैसा ही माधव भी है, क्योंकि ये भी चक्रांकित होते हैं, इनमें चक्रांकितों से इतना विशेष है कि रामानुजीय एक बार चक्रांकित होते हैं, और ये वर्ष-वर्ष फिर-फिर चक्रांकित होते जाते हैं, वे चक्रांकित कपास में पीली रेखा और माधव काली रेखा लगाते हैं। एक माधव पण्डित से किसी एक महात्मा का शास्त्रार्थ हुआ था। (महात्मा) तुमने यह काली रेखा और चांदला (तिलक) क्यों लगाया? (शास्त्री) इसके लगाने से हम बैकुण्ठ को जायेंगे और श्रीकृष्ण का भी शरीर श्याम रंग था, इसलिए हम काला तिलक करते हैं। (महात्मा) जो काली रेखा और चांदला लगाने से बैकुण्ठ में जाते हो तो सब मुख काला कर लेओ तो कहाँ जाओगे?

स्वामीजी के व्यंग्य बड़े उपदेशपूर्ण हैं। आर्य-संस्कृति के लिए आपने निःसहाय होकर भी दिग्विजय किया और उसकी समुचित प्रतिष्ठा की। स्वामीजी का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की ओर नहीं देखा, वेदों की प्रतिष्ठा की है। ब्राह्म-समाज और प्रार्थनासमाज के सम्बन्ध में आपका कहना है- 'ब्राह्म-समाज' और 'प्रार्थना समाज' के नियम सर्वांश में अच्छे नहीं, क्योंकि वेदविद्याहीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योंकर हो सकती है? जो कुछ ब्रह्म समाज, और प्रार्थना समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाया और कुछ-कुछ पाषाण आदि मूर्तिपूजा से हटाया, अन्य जाल ग्रन्थों के फन्दे से भी कुछ बचाया इत्यादि अच्छी बात है, परन्तु इन लोगों में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है, ईसाइयों के आचरण बहुत से लिए हैं। खान-पान -विवाहादि के नियम भी बदल गये हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही उसके स्थान में पेटभर निन्दा करते हैं, व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भरपेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ, आर्यवर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं, उनकी उन्नति कभी नहीं हुई। वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते, ब्रह्मसमाज के उद्देश्य की पुस्तक में साधुओं की संख्या में ईसाई', 'मूसा', 'मुहम्मद', 'नानक' और 'चैतन्य' लिखे हैं, किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा। आज शिक्षित सभी मनुष्य जानते हैं, भारत के अधःपतन का मुख्य कारण नारी-जाति का पीछे रह जाना है, वह जीवन-संग्राम में पुरुष का साथ नहीं दे सकती, पहले से ऐसी निरवलंब कर दी जाती है कि उसमें को क्रियाशीलता नहीं रह जाती। पुरुष के न रहने पर सहारे के बिना तरह-तरह की तकलीफें झेलती हुई वह कभी-कभी दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेती है, आदि-आदि। पं. लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़ जैसे पुराने और नये पण्डित अनुकूल तर्कयोजना करते हुए, प्रमाण देते हुए यह नहीं जानते कि भारत की स्त्रियाँ उनके पराधीन काल में भी किसी तरह दूसरे देशों की स्त्रियों से उचित शिक्षा, आत्मोन्नति, गार्हस्थ्य सुख-विज्ञान, संस्कृति आदि में घटकर है। इसी तरह धर्म और जाति के सम्बन्ध में उनकी वाक्यावली, आज के अंग्रेजी शिक्षित युवकों को अधूरी जँचने पर भी, निरपेक्ष समीक्षकों के विचार में मान्य ठहरती है। फिर भी, हमें यहाँ देखना है कि आजकल के नवयुवक समुदाय से महर्षि दयानन्द, अपनी वैदिक प्राचीनता लिए हुए भी, नवीन सहयोग कर सकते हैं या नहीं। इससे हमें मालूम होगा हमारे देश के ऋषि जो हजारों शताब्दियों पहले सत्य-साक्षात्कार कर चुके हैं, आज की नवीनता से भी नवीन है क्योंकि सत्य वह है जो जितना ही पीछे हैं, उतना ही आगे भी, जो सबसे पहले दृष्टि के सामने है वही सबसे ज्यादा नवीन है।

ज्ञान की ही हद में सृष्टि सारी बातें हैं। सृष्टि की अव्यक्त अवस्था भी ज्ञान है। स्वामीजी वेदाध्ययन में अधिकारी-भेद नहीं रखते। वह सभी जातियों की बालिकाओं-विद्यार्थिनियों को वेदाध्ययन का अधिकार देते हैं। यहाँ यह स्पष्ट है कि ज्ञानमय कोष चाहे वह जड़-विज्ञान से सम्बन्ध रखता हो, धर्म-विज्ञान से- नारियों के लिए युक्त है, वे सब प्रकार से आत्मोन्नति करने की अधिकारिणी हैं। इस विषय पर आप 'सत्यार्थप्रकाश' में एक मन्त्र उद्धृत करते हैं-

'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च
स्वाय चारणाय।'

- यजु 26/2

'परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिये (इमाम्)इस (कल्याणीम्)कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देनेहारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो। यहाँ कोई ऐसा प्रश्न करे कि जिन-शब्द से द्विजों का ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही को वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों का नहीं (उत्तर) ब्रह्मराजन्याभ्याम् इत्यादि देखो, परमेश्वर स्वयं कहता है, कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, (अर्याय) वैश्य (शूद्रार्य) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अति शूद्रादि के लिये भी वेदों का प्रकाश किया है, अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों को ग्रहण और बुरी बातों को त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों। कहिये, अब तुम्हारी बात मानें या परमेश्वर की? परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा, वह नास्तिक कहावेगा है, क्योंकि **'नास्तिको वेदनिन्दकः'** वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।

स्वामीजी ने वेद के उद्धरणों द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा, अध्ययन आदि वेदविहित है। उनके लिए ब्रह्मचर्य के पालन का भी विधान है। स्वामीजी की इस महत्ता को देखकर मालूम हो जाता है कि स्त्री समाज को उठाने वाले पश्चिमी शिक्षा-प्राप्त पुरुषों से वह बहुत आगे बढ़े हुए हैं। वह संसार और मुक्ति दोनों प्रसंगों में पुरुषों के ही बराबर नारियों को अधिकार देते हैं। इस एक ही वाक्य से साबित होता है कि किसी भी दृष्टि से वह नारी-जाति को पुरुष-जाति से घटकर नहीं मानते।

आपका ही प्रवर्तन आर्यावर्त के अधिकांश भागों में, महिलाओं के अध्ययन के सम्बन्ध में प्रचलित है। यहाँ स्त्री-शिक्षा-विस्तार का अधिकांश श्रेय आर्य समाज को दिया जा सकता है। यहाँ की शिक्षा की एक विशेषता भी है। महिलाएँ यहाँ जितने अंशों में देशी सभ्यता की ज्योतिस्वरूपा होकर निकलती हैं, उतने अंशों में दूसरी जगह नहीं। संस्कृति के भीतर से स्त्री के रूप में प्राचीन संस्कृति को ही स्वामीजी ने सामने खड़ा कर दिया है।

-: साभार :-
'परोपकारी' फरवरी (द्वि.)2020
प्रस्तुति- प्रियांशु सेठ

शोक समाचार

श्री प्राणनाथ खुल्लर जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून एवं आर्यसमाज धामावाला, देहरादून की वर्षों तक अनेक पदों की सेवाएं करने वाले श्री प्राणनाथ खुल्लर जी का दिनांक 5 दिसम्बर, 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 10 दिसम्बर को आर्यसमाज कैलागढ़ देहरादून में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

Continue From Last Issue

Sarve Tyagi Daya Nand stated travelling on the bank of Ganga after deciding to do away with the bad customs prevailing in Hindu society. In the first stage of reform he concentrated on different religeons only, but in the 2nd phase he thought of reform in whole Hindu society. Now it was his decision to finish all the evils prevailing in Hindu society and present the actual (real) form of Dharm. Where ever he went, he condemned eight mis beliefs. He delivered speeches in Sanskrit generally. 8 mis-beliefs were as follows. (1) 18 Purans (2) Idol Worship (3) Shaiv, Shakte, Ramanuj etc religeons (4) Books of Tantra and Leftism (Vam Marg) (5) Bhang, wine etc (6) Having sexul relation with ladies other them one's own wife. (7) Theft (8) Cheating, telling lies, vanity etc. He condemned these mis beliefs and pleaded that Brahman, Kshatries and Vaishyas were of the same (family) Gayatri. They have equal (same) right to recite Gayatri Mantra. They have right to adopt yagyopveet. Programmes held during those days reveal following views.

Swamiji's program was mainly condemning the above right actions. His heart was hurt on seeing very bad condition of Hindu society where various religions had crossed the limit. He could not sit peacefully after observing bad condition of Hindu society. Bad customs were the main cause of grief in Hindu society. That peried of Swamiji's life can termed as 'condemning period'.

From the programs given above we can conclude that where as Swamiji's had crossed the limit of religions, he couldn't cross the limit Arya society. It does not mean that he had no love for the whole human race, or he considered Arya community fit for Dharm. Generally all reformers are preaehers of universal rules, but even then they remain limited to their own atmosphere. It can be termed as universal Reformes, but even then we find condem nation of priests due to their misbehaviour and condemning of Brahmans or Budhists for prevailing customs. Any peason how so ever great he may be, but he will preach for universal rules as per experience from his own field. By that time Swamiji had experienced the condition of Aryas only. So he thought about causes of that bad condition. He did whatever he thought proper. That was mainly method of condemning.

Swamiji wore only under wear for lower part of his body. Swamiji reached Karnavas from Haridwar visiting Rishikesh and Landhora on the way. The fame received at Kumbha Fair spread all over by the Pandits gathered at Kumbh fair from all over the country. So, wherever he reached, news of arrival of Tyagi Sanyasi spread through out the area that he delivered speech in Sanskrit and defeated Swami Vishudhanand in debate and who condemns Idol Worship etc. He stayed and rest at night on bank of Ganga on sandy place. In the morning he delivered speech condemning Idol worship and giving useful messages. so, message of his arrival spread all over and people gathered to listen to him with great faith. In the beginning they felt surprised and then they fell unsatisfied afterwards having some doubts. They went to their Bahmans for removal of doubts. The Brahman used filthy language for Swamiji, but could not answer their doubts. Brahmans dared not to face Swamiji for debate.

To be Continue.....

पृष्ठ 2 का शेष

भारत देश में भगवा पादरी : षड़यन्त्र या आस्था ?

पृष्ठ 3 का शेष

औरंगाबाद में 1991 में 63 ईसाई थे। इनकी संख्या 2001 में 297 हुई और 2011 में बढ़कर 2218 हो गई। यानि वृद्धि प्रतिशत 3420.63 ऐसे ही गोपालगंज में ईसाई की संख्या 1991 में 119 थी, जो 2001 में बढ़कर 158 हो गए और 2011 में 2463 हो गई। वृद्धि प्रतिशत 1969.74 बढ़ चला। सीवान में 1991 में सिर्फ 126 ईसाई थे।

इनका आंकड़ा बढ़कर 2001 में 201 हुआ और 2011 में 2618 हो गया। वृद्धि दर 1977.77 तक बढ़ चला।

धर्म परिवर्तन कराने के लिए पैसे का इस्तेमाल तो आजादी से पहले से भी होता था, परंतु आजादी के बाद और भी बहुत तरह के प्रयोग किए जाने लगे। मिशनरियों ने अपने अनुभवों से पाया कि भारतीय धर्मों के लोग अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं से भावनात्मक तौर पर इतने गहरे जुड़े हैं कि तमाम प्रयासों के बावजूद भारत में करोड़ों की संख्या में धर्म परिवर्तन संभव नहीं हो पा रहा है। इस कठिनाई से पार पाने के लिए नए हथकंडों का प्रयोग शुरू किया गया, जैसे मदर मैरी की गोद में ईसा मसीह की जगह गणेश या कृष्ण को चित्रांकित कर ईसाइयत का प्रचार शुरू किया गया, ताकि आदिवासियों को लगे कि वे तो हिन्दू धर्म के ही किसी संप्रदाय की सभा में जा रहे हैं। ईसाई मिशनरियों को आप भगवा वस्त्र पहनकर हरिद्वार, ऋषिकेश से लेकर तिरुपति बालाजी तक धर्म प्रचार करते पा सकते हैं। यही हाल पंजाब में है, जहां बड़े पैमाने पर सिखों को ईसाई बनाया जा रहा है। पंजाब में चर्च का दावा है कि प्रदेश में ईसाइयों की संख्या सात से दस प्रतिशत हो चुकी है।

देखा जाये तो ईसाई मिशनरी विदेशी पैसे का इस्तेमाल करते हुए पिछले सात दशकों में उत्तर-पूर्व के आदिवासी समाज का बड़े पैमाने पर धर्मांतरण करा चुके हैं। यही सब मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्रों में भी चल रहा है, जहां इन गतिविधियों का फायदा नक्सली भी उठाते हैं। विदेशी पैसे का धर्मांतरण के लिए इस्तेमाल देश की सुरक्षा और स्थिरता के लिए बड़ी चुनौतियों को जन्म दे रहा है। विकसित पाश्चात्य ईसाई देशों की सरकारें धर्मांध कट्टरपंथी ईसाई मिशनरी तत्वों को धर्म परिवर्तन के नाम पर एशिया और अफ्रीका जैसे देशों को निर्यात करती रहती हैं। इससे दो तरह के फायदे होते हैं। एक तो इन कट्टरपंथी तत्वों का ध्यान गैर ईसाई देशों की तरफ लगा रहता है, जिस कारण वे अपनी सरकारों के लिए कम दिक्कतें पैदा करते हैं और दूसरे, जब भारत जैसे देशों में विदेशी चंदे से धर्मांतरण होता है, तो धर्मांतरित लोगों के जरिये विभिन्न प्रकार की सूचनाएं इकट्ठा करने और साथ ही सरकारी नीतियों पर प्रभाव डालने में आसानी होती है।

उदाहरण के लिए भारत-रूस के सहयोग से स्थापित कुडनकुलम परमाणु संयंत्र से नाखुश कुछ विदेशी ताकतों ने इस परियोजना को अटकाने के लिए वर्षों तक मिशनरी संगठनों का इस्तेमाल कर धरने-प्रदर्शन करवाए। तत्कालीन संप्रग सरकार में मंत्री वी नारायणस्वामी ने यह आरोप लगाया था कि कुछ विदेशी ताकतों ने इस परियोजना को बंद कराने के लिए धरने-प्रदर्शन कराने के लिए तमिलनाडु के एक बिशप को 54 करोड़ रुपये दिए थे। इस मामले में विदेशी चंदा प्राप्त कर रहे चार एनजीओ पर कार्रवाई भी की गई थी।

इसी प्रकार का दूसरा उदाहरण वेदांता द्वारा तूतीकोरीन में लगाए गए स्टरलाइट कॉपर प्लांट का है। इस प्लांट को बंद कराने में भी चर्च का हाथ माना जाता है। आठ लाख टन सालाना तांबे का उत्पादन करने में सक्षम यह प्लांट अगर बंद न होता, तो भारत तांबे के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया होता। यह कुछ देशों को पसंद नहीं आ रहा था और इसलिए उन्होंने मिशनरी संगठनों का इस्तेमाल कर पादरियों द्वारा यह दुष्प्रचार कराया कि यह प्लांट पूरे शहर की हर चीज को जहरीला बना देगा। इस दुष्प्रचार के बाद हिंसा भड़की और पुलिस फायरिंग में 13 लोगों की मौत हो गई। नतीजा यह हुआ कि यह प्लांट बंद कर दिया गया। यह अभी भी बंद है और 23 साल बाद भारत को एक बार फिर तांबे का आयात करना पड़ रहा है।

यानि देश को गहरे नुकसान से बचाने के लिए विदेशी चंदे पर पूरी तरह रोक के साथ-साथ मिशनरी संगठनों की गतिविधियों पर सख्त पाबंदी आवश्यक है। क्योंकि धर्मांतरण सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करने के साथ देश की सुरक्षा के लिए चुनौती बन रहा है और भगवा रंग की आड़ में भी यह खेल खेला जा रहा है। -*सम्पादक*

सामने कुछ भी नहीं। यदि आपका शरीर न बचे तो सब यूं ही पड़ा रह जाएगा। आज आप इस रहस्य को समझ गए होंगे कि जीवन सबसे मूल्यवान होता है। यह जीवन शरीर पर निर्भर होता है, इसलिए शरीर जीवन से भी ज्यादा मूल्यवान् होता है। शरीर की रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए, जैसे आप इस वक्त सारा राज्य देने को तैयार हो गए हैं। **याद रखें, सुखी जीवन जीने के लिए स्वस्थ शरीर होना सबसे ज्यादा जरूरी है।**

कई लोगों को यह बात, इस राजा की तरह तब तक समझ नहीं आती, जब तक उनका स्वास्थ्य बिगड़ न जाए वे बीमार न पड़ जाएं। जब बीमार पड़ते हैं तब स्वास्थ्य की याद आती है। आपने शायद यह दोहा पढ़ा या सुना है-

दुःख में सुमिरन सब करें,
सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करें,
तो दुःख काहे को होय।।

यह दोहा ईश्वर की उपासना के विषय में है, लेकिन इस दोहे पर यदि हम शरीर और स्वास्थ्य की दृष्टि से विचार करें तो भी यह दोहा बिलकुल सटीक बैठता है। हम ईश्वर के मामलें में ही नहीं अन्य कई मामलों में भी तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक हमारे सिर न आन पड़े।

यदि हम स्वस्थ अवस्था में ही शरीर और स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, शरीर के सभी अंगों को स्वस्थ रखने का प्रयास रखें और स्वास्थ्य की रक्षा करते रहें तो अस्वस्थ होने नौबत ही क्यों आए? इसलिए अपने स्वास्थ्य की रक्षा करें।

सोमवार 4 दिसम्बर, 2023 से रविवार 10 दिसम्बर, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 06-07-08/12/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 06 दिसम्बर, 2023

प्रतिष्ठा में,

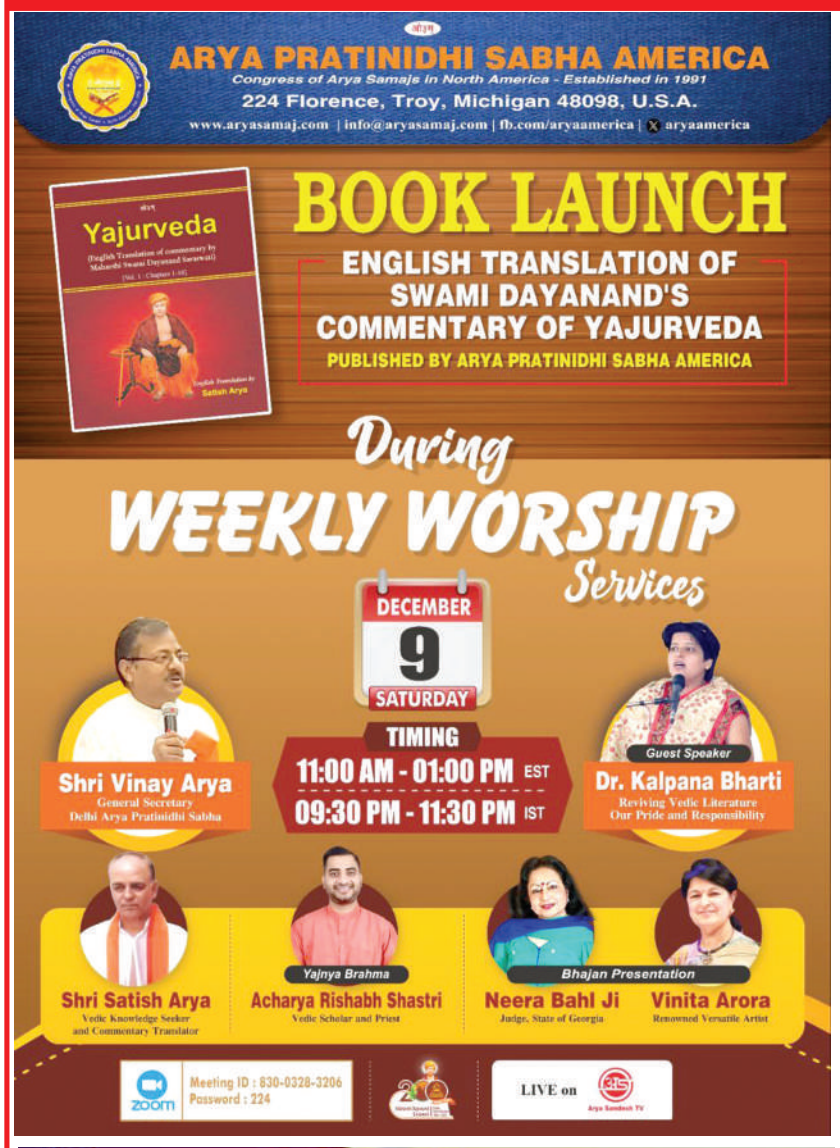

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
www.vedicprakashan.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह